

RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 फरवरी 2024

अंक 449 ● फरवरी 2024

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका



मूल्य ₹50



New Delhi | नई दिल्ली
World Book Fair | विश्व पुस्तक मेला



Books for All

10-18 February 2024 | 11 AM-8 PM
Hall Nos. 1-5, Pragati Maidan, New Delhi

Theme

बहुभाषी **MULTI**
भारत **LINGUAL**
INDIA

एक जीवंत परंपरा A Living Tradition

एक नए पेंगोलिन की खोज

रोहन चक्रवर्ती

अनुवाद: विनता विश्वनाथन

इस बचाव की मुद्रा से थोड़ा ब्रेक लो, पेंगोलिन! तुम्हारे बन्धुओं के लिए एक खुशखबरी है — हाल ही में पेंगोलिन की एक नई किस्म, 'रहस्यमय पेंगोलिन' की खोज हुई है!



अरे वाह!



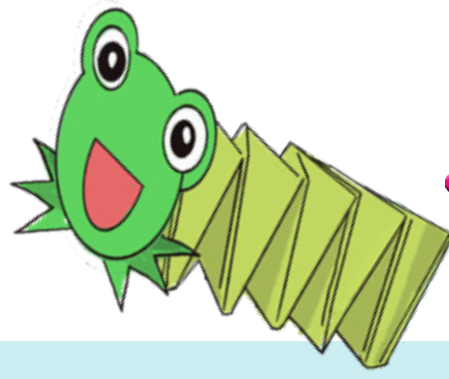
इसका पता सिर्फ लपट पेंगोलिन के शल्कों की जाँच से चला है...



@*#%!



इस साल 17 फरवरी को विश्व पेंगोलिन दिवस (World Pangolin Day) मनाया जाएगा। इस दिन पेंगोलिन की किस्मों और उनके व्यापार के बारे में लोगों को जागरूक करने की कोशिश की जाती है। चीन और वियतनाम जैसे देशों में पेंगोलिन से खास पकवान बनते हैं और पारम्परिक चिकित्सा में भी इनका इस्तेमाल होता है। इसी कारण दुनिया भर में इनकी आबादियाँ खतरे में हैं।



अंक 449 • फरवरी 2024

चकमक

इस बार

एक नर पैंगोलिन की खोज - रोहन चक्रवर्ती	2
मैं - भली! - सुजाता पद्मनाभन	4
कविता डायरी - 6 - मुर्गी माँ... - सुशील शुक्ल	8
तुम भी बनाओ - जम्पिंग फ्रॉग - प्रभाकर डबराल	10
सर्दों के दिनों में ठण्डी चीज़ें खाएँ... - सुशील जोशी	12
देखे-अनदेखे घोंसले - सुशील जोशी और प्रतिका गुप्ता	14
क्यों-क्यों	18
आम देखिए - सुशील शुक्ल	22



डर - प्रभात	24
गणित है मजेदार - त्रिकोणीय संख्या -	
भाग 2 - आलोका कान्हेरे	26
तुम भी जानो	30
भूलभुलैया	31
माथापच्ची	32
चित्रपहेली	34
मेरा पत्रा	36
आप कहाँ से? - श्याम सुशील	43

सम्पादक

विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक

कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार

सुशील जोशी

उमा सुधीर

वितरण

इनक राम साहू

डिज़ाइन

कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग

इशिता देबनाथ बिस्वास

सलाहकार

सी एन सुब्रह्मण्यम्

शशि सबलोक

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क

(रजिस्टर्ड डाक सहित)

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

एकलव्य

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,

वेबसाइट: <https://www eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

आवरण: तनुश्री रॉय पॉल

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।

एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:

बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल

खाता नम्बर - 10107770248

IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी

accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।



मैं — अली!

सुजाता पद्मनाभन
चित्र: तनुश्री रॉय पॉल

अनुवाद: विनता विश्वनाथन सम्पादन: शशि सबलोक

नदी किनारे बैठा अली उस पार के गाँव लुंगमाचन पर नज़रें टिकाए था। शाम की रोशनी धुंधलाती जा रही थी। लेकिन गाँव की भाग-दौड़ को वो फिर भी देख पा रहा था। क्या आज रात किसी का निकाह होने वाला था? किसका हो सकता है? कहीं मेरी छोटी बहन फातिमा का तो नहीं?

सोचते हुए अली की आँखें भर आईं। खुबानी के पेड़ की छाँव में बैठा अली लुंगमाचन में हो रही चहल-पहल को देख रहा था। घण्टा भर हो गया था। लम्बी साँस भरते हुए उसने पेड़ के तने से पीठ टिका दी, “वाकई अगर फातिमा का निकाह है तो मुझे वहाँ होना चाहिए था!”

“तुम्हारी बहन के लिए हम दूल्हा ढूँढ रहे हैं।” अपने बेटे को चाय का गिलास थमाते हुए उसके अबा ने कहा। अली ने फातिमा को देखा। फातिमा मुस्कराते हुए फुसफुसाई, “अली, जब भी हो, तुम्हें मेरे निकाह में हर हाल में आना है।” “फातिमा, ऐसा करते हैं दो-चार दिनों में तुम्हारे लिए दूल्हा ढूँढ लेते हैं। फिर तो मैं आऊँगा ही आऊँगा।” अली ने यकीन दिलाया।

कुछ पलों के लिए कमरे में खामोशी पसर गई। आँसुओं को रोकने की कोशिश में अली अपने होंठ काटने लगा। ऑट के आटे से किसिर बनाती अमा से यह छुपा न रहा। वो बोल पड़ी, “तुम्हारे बिना हम निकाह कैसे कर सकते हैं, अली? तारीख तय होते ही हम तुम्हें इत्तला कर देंगे। तब तुम्हें फिर से घर आना होगा।” “हाँ, बिलकुल, अमा।” अली ने प्यार से जवाब दिया। पर मन ही मन वो जानता था कि यह कितना मुश्किल होने वाला था। उसने फातिमा के हाथ को कसकर पकड़ लिया।

अपने अबा, अमा और फातिमा से मिलने के लिए अली ने कितना लम्बा सफर तय किया था। पिछले साल ही तो उनकी खबर उसे मिली थी। पास के गाँव का कबीर एक दिन अली के घर आया। और जो बोला उस पर अली को यकीन ही नहीं हुआ — अली के अमा, अबा और एक बहन ज़िन्दा थे और लुंगमाचन गाँव में रह रहे थे। कबीर ने उसे तीनों की एक धुँधलाई-सी फोटो दी। फोटो के पीछे चमकीले लाल रंग में लिखा था — तुम्हें देखने की बड़ी तमन्ना है, अली। अली के काँपते हाथों में फोटो देते हुए कबीर धीमे-से बोला, “मुझे फोटो देने से पहले यह तुम्हारी छोटी बहन फातिमा ने लिखा था।”

लुंगमाचन? अली हैरानी से बोला, “वो तो बस दरिया के उस पार ही है।” “हाँ अली,” कबीर बोला, “तुम्हारे अबा ने भी बिलकुल यही कहा था। ‘मेरा बेटा दरिया के उस पार है और मैं उसे मिल तक नहीं सका!’”

अली महज़ तीन साल का था जब वो अपने अमा-अबा से अलग हो गया था। उसके साथ क्या हो रहा था यह समझने के लिए वह बहुत छोटा था। लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया, हिमालय के ऊँचे पहाड़ों में बसे उनके छोटे-से कस्बे में हुई उन भयावह घटनाओं का खुलासा होता गया।

“मुझे अपने कुनबे के और लोगों के बारे में बताइए,” वह बार-बार मेमेले (अली के नाना/दादा) से ज़िद करता। मेमेले बड़े सबर से उसके सवालों के जवाब देते। दोनों अक्सर दरिया के किनारे बैठे रहते। खास तौर पर सर्दियों की दोपहरों में धूप तापते रहते। शाम होते-होते मजबूरन उन्हें कांगरे की गर्माहट में पनाह लेने भीतर जाना पड़ता।



अली के पास बस सवाल थे। “मेरे अबा कैसे थे? मैं अपनी अमा जैसा ज़्यादा दिखता हूँ या अबा जैसा? सैनिक यहाँ क्यों आए थे? तुम मेरे नाना/दादा कैसे बने?...”

अली बार-बार अपने कुनबे के और लोगों के बारे में पूछता। और मेमेले बार-बार वही कहते जो अभी तक कहते आए थे। गाँव के लोग बारी-बारी से मवेशियों को ऊपर पहाड़ पर चराई के लिए ले जाते थे। उस बदनसीब दिन जब सैनिक उनके गाँव आए थे, मवेशियों को ले जाने की बारी अली के परिवार की थी। अली को मेमेले की हिफाज़त में छोड़कर अबा और अमा सुबह-सुबह निकल गए थे। मेमेले का घर पास में ही था। अमा-अबा जब कभी काम में मसरूफ होते, अली को मेमेले की देखरेख में छोड़ जाते थे। अली को इसकी आदत हो चुकी थी।

“उस दिन जब सैनिक आए, हम सब बहुत घबराए हुए थे। लेकिन सैनिक मेहरबान थे। कोई गोली-बारी नहीं हुई। धमाकों की आवाज़ें बीचबीच

में सुनाई दे रही थीं। पर वो दूर से आती आवाज़ें थीं। जंग जैसा कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था। पर हाँ, हमारे गाँव के साथ-साथ आसपास के गाँवों में भी सैनिक फैले हुए थे। चप्पे-चप्पे पर उनका पहरा था। हर बार गाँव से आने-जाने से पहले वो सबकी चैकिंग कर रहे थे।”

कुछ देर दम लेने को मेमेले रुके और फिर बोलने लगे, “कुछ ही हफ्तों में हमने सुना कि हमारे गाँव का देश बदल गया था। जंग से पहले हमारा गाँव पाकिस्तान में था। पर जंग के बाद हम हिन्दुस्तान का हिस्सा बन गए थे।” “पर मेरे अबा-अमा...” वो अपना सवाल पूरा करता उससे पहले मेमेले बोल पड़े, “तुम्हारे अबा-अमा सुबह जिस पहाड़ पर मवेशियों को चराने ले गए थे जंग के बाद वो पाकिस्तान में रह गया था। और हमारा घर, गाँव हिन्दुस्तान का हिस्सा बन गया था। अब वो पाकिस्तान लौट नहीं सकते थे। कितने ही परिवार इस तरह बिछुड़ गए। इस्सू, रज़ा और शकीना — सबके रिश्तेदार हैं। पर अब वे सरहद के उस पार हैं।”



ऐसी हर तकरीर के बाद अली मेमेले को गले लगाकर कहता, “मैं बहुत खुश हूँ कि मैं आपके परिवार का हिस्सा हूँ!” उसे बाँहों में कसते हुए मेमेले कहते, “तुम हमारे परिवार का हिस्सा नहीं हो अली, तुम तो हमारा परिवार हो!”

अली अभी पच्चीस का हुआ ही था जब कबीर ने उसे उसके परिवार की खबर दी थी। कबीर ने बताया कि सरहद पार कर उनसे मिलने के लिए वह एक खास पर्मिट के लिए दर्खास्त दे सकता था। वो खुद भी इस तरह अपने चाचा और चाची से सालों बाद मिल आया है।

एक साल बाद अली ने लुंगमाचन तक का ये सफर तय किया। अपनी बहन फातिमा को वो पहली बार देख रहा था। अबा-अमा ने लुंगमाचन में नए सिरे से ज़िन्दगी शुरू की। यहीं फातिमा का जन्म हुआ। अबा-अमा भी अली को अजनबी-से लगे। “तुम हमें याद भी कैसे रखते?” अबा बोले। “सिर्फ तीन साल के तो थे! ऐसा एक दिन भी नहीं गुज़रा जब अमा और मैंने तुम्हें याद न किया हो अली। तुम हमेशा हमारे दिलो-दिमाग में रहे।” “अबा अक्सर दरिया के किनारे खड़े होकर उस पार नज़र टिकाए रहते। इस उम्मीद में कि कहीं दिख जाओ,” अमा की नज़र अली से पल भर को हट नहीं रही थी। “जब कभी

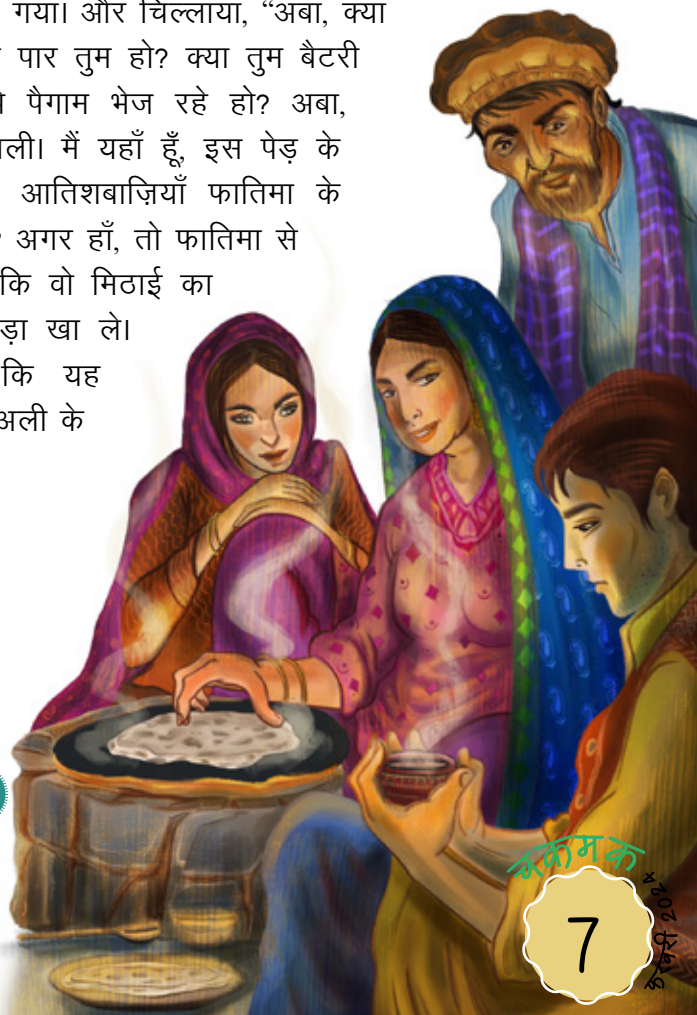
घर में मीठा बनता, अली के लिए कहते हुए अमा हमेशा मुझे थोड़ा और दे देती,” फातिमा ने कहा।

जैसे-जैसे अँधेरा गहराता गया, लुंगमाचन का आसमान पटाखों से चमक उठा।

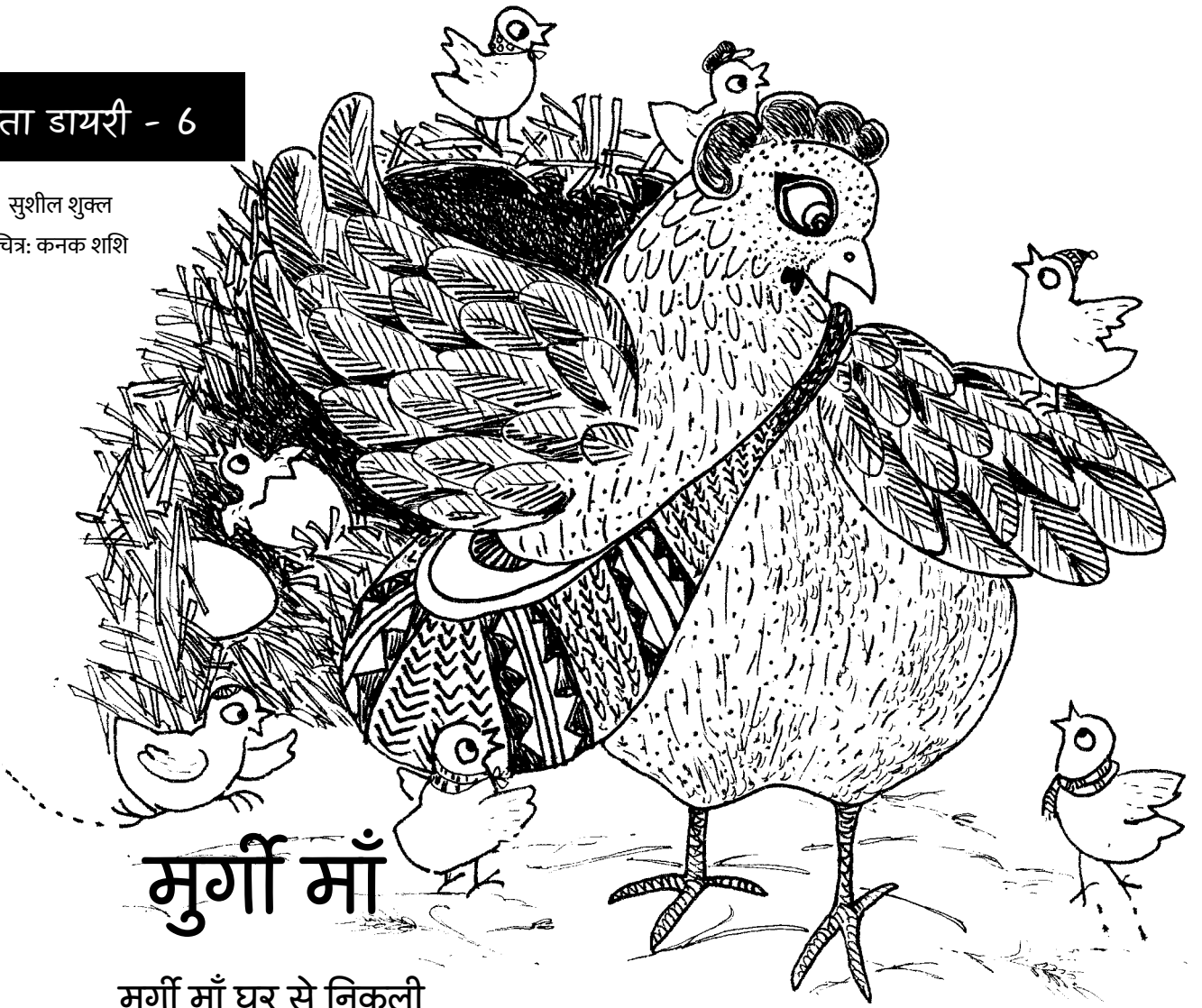
दुल्हन के रूप में फातिमा कैसी दिख रही होगी, अली ने सोचा। दूल्हा कौन होगा? उसका होनेवाला जीजा कौन होगा? क्या अबा और अमा ने उसे निकाह की खबर भेजने की कोशिश की होगी? शायद उनका खत उस तक पहुँचा ही नहीं होगा। अचानक उसे रोशनी की एक शहतीर दिखाई दी। लगा जैसे दरिया के उस पार से उस तक निशाना लगाया जा रहा था। शहतीर तेज़ी-से दाएँ-बाएँ हिलने लगी। क्या लुंगमाचन से कोई इशारा कर रहा था? अली चौंककर बदहवास-सा उठा और रोशनी की उस किरण को पकड़ने की उम्मीद में ताबड़तोड़ उसका पीछा करने लगा। अचानक वो चमक बुझ गई। दोबारा अँधेरा छा गया।

अली ने दरिया के उस पार देखा और रोते हुए अपने घुटनों पर गिर गया। और चिल्लाया, “अबा, क्या दरिया के उस पार तुम हो? क्या तुम बैटरी चमकाकर मुझे पैगाम भेज रहे हो? अबा, अमा, मैं — अली। मैं यहाँ हूँ, इस पेड़ के नीचे! क्या वो आतिशबाज़ियाँ फातिमा के निकाह की हैं? अगर हाँ, तो फातिमा से ज़रूर कहना कि वो मिठाई का एक और टुकड़ा खा ले। उसे कहना कि यह मिठाई उसके अली के हिस्से की है!”

ये काल्पनिक कहानी उन लोगों से प्रेरित है जो अपने परिवार के करीबी सदस्यों से जंग के कारण अलग हुए हैं। जंग के खतरे के समय हम अक्सर उन लोगों के बारे में नहीं सोचते जो सरहद के पास के गाँवों में रहते हैं। सबसे ज़्यादा तो वही झेलते हैं। सरहदें लोगों के दिलों में नहीं होतीं, बदकिस्मती से ये अक्सर जंग और बँटवारे जैसी घटनाओं का नतीजा होती हैं।



सुशील शुक्ल
चित्र: कनक शशि



मुर्गी माँ

मुर्गी माँ घर से निकली
झोला ले बाज़ार चली
बच्चे बोले, चें चें चें
अम्मा हम भी साथ चलें?

यह इस मामले में भी निराली कविता है कि इसमें किसी जीव का स्वभाव बरकरार रखा गया हो। किरदार का स्वाभाविक होना रचना में फैलकर रहता है। रचना स्वाभाविकता से महक उठती है। निरंकारदेव सेवक की इस कविता में माँ इन्सानी माँ नहीं है। माँ महान है जैसे मुहावरों से मुक्त है। कवि ने माँ की सम्भावित छाया से पूरी रचना को साबुत बचा लिया है। सृष्टि में कितनी ही माँएँ हैं जो कहीं जाएँगी तो बच्चे पीछे-पीछे चलने लगेंगे।

यूँ देखें तो यह कविता तीसरी लाइन में जाकर पूरी हो जाती है। एक मुर्गी बाज़ार के लिए निकली है। झोला लेकर। चूज़े उससे कुछ कह रहे हैं – बच्चे बोले, चें चें चें। कवि एक कदम आगे जाकर अन्दाज़ लगाते हैं कि वे चें चें चें कहकर असल में क्या कह रहे हैं। कह सकते हैं कि इस कविता की चौथी पंक्ति असल में तीसरी पंक्ति का ही अनुवाद है – अम्मा हम भी साथ चलें...।

एक उस्ताद कवि आराम से इस कविता को कोई और मोड़ दे सकता था। मगर तब यह बात पैदा न होती। कवि चें चें चें के लिए अपनी भाषा में जगह बनाता है। चें चें चें की भाषा को समझने की इसी कोशिश ने कविता को एक अनूठी कविता में बदल दिया है।

इस कविता की पटरी से कुछ पल उतर जाते हैं। इस वाक्य के ठीक बाद आने वाले कुछ समय के बारे में सोचते हैं। यह समय कितना सम्भावना भरा है। दुनिया भर के काम हमारे सामने हैं। हम उनमें से किसी भी काम को चुन सकते हैं। उनमें से कोई भी काम करके हम अपना समय बिता सकते हैं। बड़े से बड़े काम और कामों की सम्भावना आने वाले समय में है। कवि सम्भावनाओं से भरे इन पलों को परे कर देता है। और मुर्गी को देखना चुनता है। देखना चुनता है कि मुर्गी कहीं जा रही है और उसके पीछे उसके बच्चे जा रहे हैं। सिर्फ देखता ही नहीं है। वह इस देखने को दर्ज करता है। कविता में। कवि ने इस वाकए में अपना समय खर्च किया। इसी वजह से अभी हम एक सुन्दर, सरल-सी कविता पढ़ पा रहे हैं। उसने आने वाले समय में एक और सम्भावना टाँक दी थी। कि कोई चाहे तो मुर्गी की कविता पढ़कर अपना समय गुज़ार सकता है। मुर्गी के जीवन के एक पल को एक स्मृति में पिरो दिया। हमेशा के लिए। एक आम-से पल को याद रखने लायक बनाया। दुनिया के बड़े-बड़े याद रखे जाने लायक कामों के बीच इस एक आम-से वाकए की जगह बनाई।

आज हम किस बात को याद रखते हैं, किस बात पर विचार करते हैं, किस बात की स्मृति बनाते हैं? इसी से आने वाला समय भी बनता है। कि हम किस तरह की यादों से भरे आने वाले समय को बिताने जाते हैं। हम आहिस्ते से यह कह सकते हैं कि कविताएँ-कहानियाँ हमारा समय रचना जानती हैं।

हिन्दी के विलक्षण कवि प्रभात की एक कविता याद आती है। क्या यह बात ठीक लगती है कि एक अच्छी कविता या कहानी कई दूसरी कविताओं और कहानियों की याद खींच-खींच लाती है? इस कविता को पढ़ने से पहले उन सब बातों को एक दफे फिर याद कर लीजिए, जो हम मुर्गी माँ कविता के सिलसिले में करके आए हैं। फिर इसे उन सब बातों की रोशनी में देखिए।

सूखी बेलें

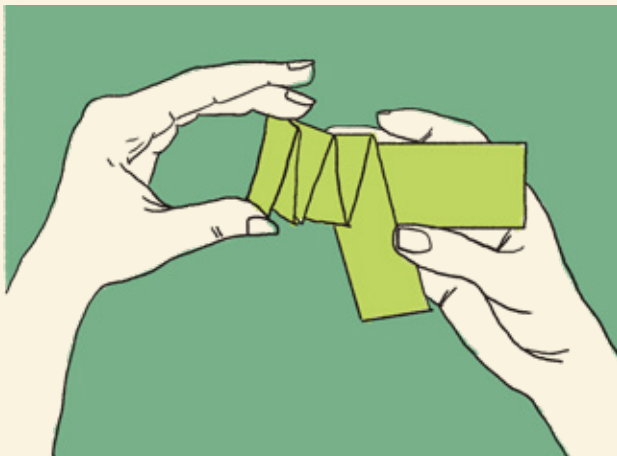
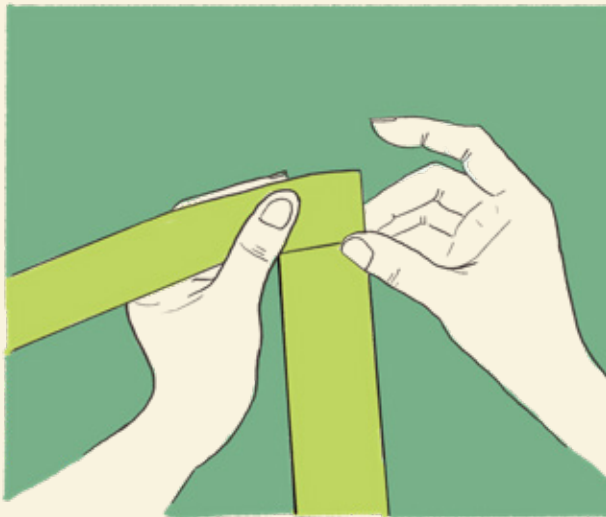
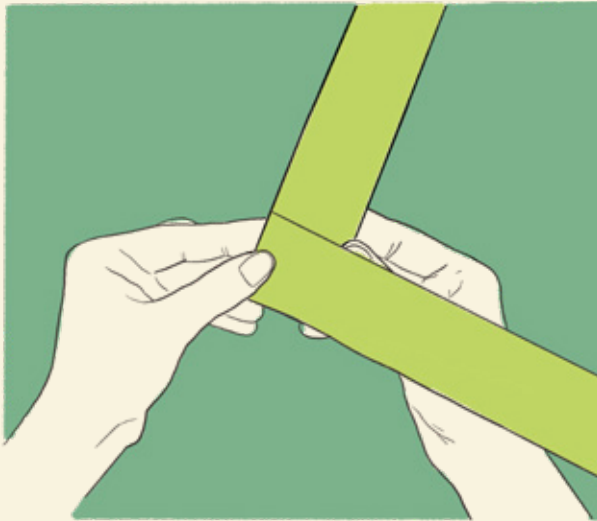
लम्बी बेलें ककड़ी की
धूप से हो गईं अकड़ी-सी
सूख गईं फिर लकड़ी-सी

ककड़ी की बेल कभी हरी रही होगी। अब वह सूख गई है। उसके सुन्दर पीले फूल भी अब उसकी पहचान नहीं रहे। उसके रोएँदार पत्ते झड़ गए हैं। उस बेल पर हरी धारियाँ रहती थीं। शायद उसने पानी के साथ-साथ वे सूरज को लौटा दी हैं। ककड़ी की बेल को जब उसमें ककड़ी नहीं फली हों तब ही पहचानना मुश्किल है। पर यहाँ तो वह सूख के लकड़ी हो गई है। ('सूख के काँटा हो जाना' और 'सूख के लकड़ी हो जाना' दो मुहावरे हैं।) एक कवि समय और स्थान में विचरता रहता है। उसका तो काम ही है समय और स्थानों को उलट-पुलटकर देखना। हम अपने जीवन में एक क्षण आगे-पीछे नहीं जा सकते हैं। तब साहित्य हमें समय में यात्रा का मौका देता है।

हमारी किताबों में भी अक्सर पेड़-पौधों की बातें होती हैं। मगर वहाँ का मुहावरा अलग है — पेड़ ऑक्सीज़न देते हैं। पेड़ फल देते हैं। छाया देते हैं। एक मशहूर किताब का नाम ही है — दानी पेड़। पेड़ तो पेड़ है। हमने अपनी भाषा में उसे दानी पेड़ बना दिया। पेड़ों पर बात करने का यह कोई सलीका हुआ भला... कि जिसमें पेड़ों से पहले उनके उपयोग की बात सामने आ जाए। अपनी हवाओं, पत्तियों, छाँव, तने, फूलों, फलों, पंछियों, बारिशों को छोड़कर उनकी पहचान बन जाए कि वे कुछ देते हैं। सूखी बेल पर लिखी यह कविता ऐसी तमाम बातों के खिलाफ एक अपील है। बयान है। रपट है।



जम्बिंग फ्रॉग



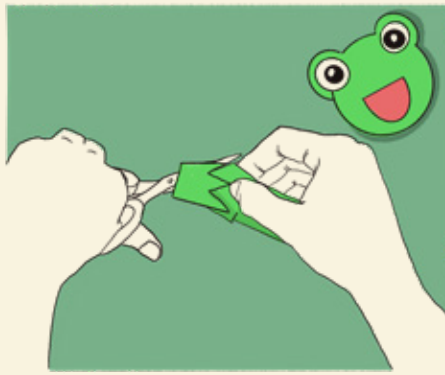
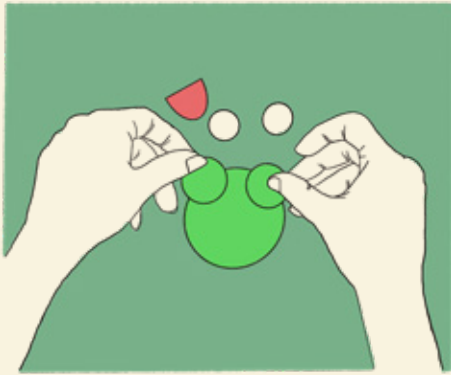
प्रभाकर डबराल

तुम्ही बनाओ

सामग्री: हरा चार्ट पेपर, गुलाबी कागज का टुकड़ा, कैंची, एक जोड़ी गुगली आँखें, काला स्केच पैन, ग्लूस्टिक या गोंद

1. कागज की दो लम्बी मगर थोड़ी पतली पट्टियाँ काटो। एक को आड़ा और दूसरी को खड़ा रखकर उनके सिरों को चिपका लो।
2. चिपकाए हुए सिरे पर आड़ी पट्टी को मोड़ो। फिर उसके ऊपर खड़ी पट्टी को मोड़ो। दोनों पट्टियों के आखिरी सिरों पर पहुँचने तक पट्टियों को बारी-बारी इसी तरह मोड़ो। मोड़ों को बिना खोले आखिरी सिरों को गोंद से चिपका लो।
3. स्प्रिंगनुमा संरचना के लिए मुड़ी हुई पट्टियों को फैलाओ।





4. अब हरे चार्ट पेपर से एक थोड़ा बड़ा गोला और दो छोटे-छोटे गोले काट लो। छोटे गोलों के बीच में एक-एक गुगली आँख चिपका लो। इन्हें बड़े गोले के ऊपर एक-दूसरे के बगल में चिपका लो। गुलाबी कागज़ से जीभ जैसी आकृति काटकर इसे भी बड़े गोले पर चिपका लो। मेंढक का सिर तैयार हो गया है।



5. चार्ट पेपर के एक किनारे पर मेंढक के जाल वाले पैरों जैसे चार ज़िगज़ैग पैटर्न बना लो। इन्हें काटकर चित्र में दिखाए तरीके से स्प्रिंगनुमा संरचना के ऊपर व नीचे के सिरों पर चिपका लो।



6. अब मेंढक के सिर को स्प्रिंगनुमा संरचना पर चिपका लो। सिर को नीचे दबाने से मेंढक उछलेगा। ऐसा लगेगा जैसे उसने मेंढक की तरह छलाँग लगाई हो।



सर्दी के दिनों में ठण्डी चीज़ें खाएँ या नहीं

सुशील जोशी

सवाल यह था कि सर्दी के मौसम में अक्सर बच्चों को ठण्डी चीज़ें खाने-पीने को मना किया जाता है यह कहकर कि जुकाम हो जाएगा। क्या तुम्हें इस बात में सच्चाई लगती है। यदि हाँ, तो क्यों?

इस सवाल का जवाब इतना आसान नहीं है। पहले तो यह पता करना होगा कि ठण्डी चीज़ किसे कहें। क्या उन चीज़ों को ठण्डा कहें जो छूने में ठण्डी लगती हैं या अमरूद जैसी कुछ चीज़ों को भी ठण्डा कहा जा सकता है।

तो सबसे पहले तो यह देखते हैं कि क्या जुकाम सिर्फ सर्दियों में होता है। हाँ यह सही है कि जाड़े के मौसम में जुकाम ज़्यादा होता है। लेकिन यह सही नहीं है कि जुकाम सिर्फ जाड़ों में होता है।

तो लगता है कि कुछ सम्बन्ध तो है ठण्ड और जुकाम का।

वैज्ञानिकों को ऐसे सवाल ज़रूर परेशान करते हैं और वे इनका जवाब ढूँढने की कोशिश भी करते हैं। तो देखते हैं कि वैज्ञानिकों ने क्या पाया।

जुकाम और जाड़े में सम्बन्ध

सबसे पहली बात तो यह समझ में आई है कि साधारण जुकाम शरीर में बाहर से आने वाले कुछ बैक्टीरिया या वायरसों की वजह से होता है। अब सवाल पैदा होता है कि ये मेहमान जाड़ों में क्यों ज़्यादा आते हैं। इसका एक बड़ा कारण यह लगता है कि जाड़ों में तापमान कम होता है और हवा सूखी होती है। ये दोनों ही बातें बैक्टीरिया और वायरसों को सुहाती हैं।

एक और बात यह है कि जब कभी भी ऐसा कोई मेहमान हमारे शरीर में घुसता है तो नाक सबसे आसान रास्ता होता है। तुम ही सोचो हमारे पास नाक को बन्द रखने का कोई तरीका नहीं है – नाक से साँस लेना तो जीवन है। लेकिन यह रास्ता एकदम बगैर किसी पहरेदार के नहीं छोड़ दिया जाता। नाक में चिपचिपे पदार्थ का एक अस्तर होता है और वहाँ ये पहरेदार बैठे होते हैं। जैसे ही उन्हें कोई नुकसानदायक मेहमान घुसता दिखता है, वे उस पर हमला बोल देते हैं। इस हमले का एक प्रमुख हथियार यह होता है कि चिपचिपा अस्तर तरल छोड़ने लगता है। इसी को कहते हैं नाक बहना। और भी बहुत-से हथियार होते हैं जो ऐसे अनचाहे मेहमानों से निपट लेते हैं। लेकिन जाड़ों के दिनों में नाक का सूखा वातावरण बैक्टीरिया, वायरस वगैरह से बहुत बढ़िया ढंग से नहीं निपट पाता। इसलिए ये मेहमान अन्दर तक पहुँच जाते हैं और जुकाम ही नहीं, बुखार वगैरह का तोहफा भी दे देते हैं।

ये मेहमान वैसे तो हवा में भी रहते हैं। लेकिन आम तौर पर ये व्यक्ति से व्यक्ति तक पहुँचते हैं। कोई छींके और उसकी नाक में ऐसे बैक्टीरिया, वायरस वगैरह हों, तो छींक के साथ निकली बारीक-बारीक बूँदों के द्वारा ये किसी दूसरे व्यक्ति को मिल सकते हैं। यदि किसी ने अपने हाथ से दरवाज़ा खोला, मोबाइल चलाया, साइकिल चलाई तो उनकी सतह पर सवारी करके ये मेहमान दूसरे व्यक्ति के घर यानी शरीर में पहुँच सकते हैं।

ठण्डी चीज़ों और जुकाम का सम्बन्ध

अब आते हैं अपनी मनपसन्द आइसक्रीम पर। वैसे तो सर्दियों में आइसक्रीम या बर्फ का गोला या गन्ने का रस जैसी चीज़ें मिलती ही नहीं हैं। सर्दियों में शादी-वादी में जाओ तो वहाँ के मेनू में भी ऐसी चीज़ें नहीं रहतीं। तो मुझे तो लगता है, किसी को मना करने की ज़रूरत ही नहीं क्योंकि आइसक्रीम मिलेगी ही नहीं। और वैसे भी सर्दियों में ठण्डी-ठण्डी चीज़ें खाने का मन भी नहीं करता।

लेकिन सवाल यह है कि यदि मन करे और मिल जाए तो क्या करें। मैंने जितना पढ़ा और जितना करके देखा है, उससे मेरा तो मत है कि ये बातें वहम हैं। मैंने डॉक्टरों की राय भी देखी। उनका भी कहना है कि ठण्डी चीज़ें खाने से जुकाम-वुकाम नहीं होता। हाँ, यह हो सकता है कि किसी व्यक्ति को किसी चीज़ से एलर्जी हो या अन्य कोई दिक्कत हो और वह धरा जाए। लेकिन सबके लिए ऐसा कोई नियम नहीं बनाया जा सकता।

इतना तो ज़रूर कह सकते हैं कि खूब सारी ठण्डी चीज़ खा लोगे या ठण्डे पानी से नहा लोगे या ठण्डी हवा में घूमोगे तो शरीर का तापमान कम



चित्र: सरस सिटोले, चौथी, प्राथमिक शाला झिरन्या, खरगोन, मध्य प्रदेश

होने से परेशानी हो सकती है। वैसे तो शरीर में यह व्यवस्था होती है कि वो गर्मी-ठण्डी को सँभाल ले और खुद का तापमान उचित बनाए रखे। लेकिन ज़्यादाती करोगे तो इस व्यवस्था की भी सीमाएँ हैं और यह जवाब दे जाएगी। तब तुम परेशानी में पड़ जाओगे।



एकलव्य

विश्व पुस्तक मेला

नई दिल्ली

10-18 फरवरी, 2024

हम कई नई किताबें आप सभी के लिए लेकर आ रहे हैं

हमसे मिलें:

हिन्दी एवं चिल्ड्रन पबेलियन में

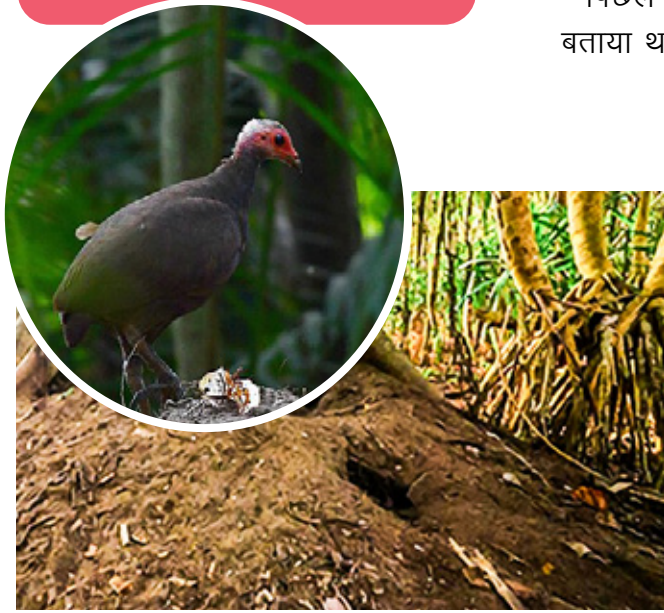
विश्व पुस्तक मेला

10 से 18 फरवरी 2024

प्रगति मैदान, नई दिल्ली

देखे-भनदेखे घोंसले

सुशील जोशी और प्रतिका गुप्ता



अधिकांश पक्षी घोंसले बनाते हैं। कई लोगों को लगता है कि पक्षी ये घोंसले अपने रहने के लिए बनाते हैं। लेकिन वास्तव में घोंसले उनके अण्डों के इनक्यूबेशन के लिए बनाए जाते हैं। घोंसलों में अण्डे और कभी-कभी इनसे निकले चूजे भी मौसम की मार और शिकारियों से महफूज़ रहते हैं। घोंसलों की एक विशेषता यह होती है कि वे अण्डों के अन्दर विकसित होते भ्रूण के लिए सही तापमान और नमी उपलब्ध कराते हैं।

पिछले अंक में हमने पक्षियों के घोंसलों की कुछ किस्मों के बारे में बताया था। कुछ अन्य किस्मों के बारे में यहाँ पढ़ना...

टीलेदार घोंसले

कुछ पक्षी मिट्टी या टहनियों और पत्तियों के ऊँचे टीले बनाकर उनके अन्दर अण्डे देते हैं। निकोबार जंगली मुर्ग में घोंसला बनाने का ज़िम्मा नर का होता है। लेकिन अण्डों का तापमान नियंत्रित रखने के लिए पत्ते-टहनियाँ नर-मादा दोनों घटाते-बढ़ाते रहते हैं।

निकोबार जंगली मुर्ग

(Nicobar Megapode — *Megapodius nicobariensis*)



जल राशियों (नदी, तालाब वगैरह) के किनारे रहने वाले फ्लेमिंगो जैसे कुछ पक्षी टीले बनाकर उसकी चोटी पर थोड़ा गड़ढा करके उसमें अण्डे देते हैं। इससे घटते-बढ़ते जल स्तर से उन्हें नुकसान नहीं होता है। घोंसले समूह में बनाए जाते हैं व नर-मादा मिलकर इन्हें बनाते हैं। और चूज़ों की देखभाल सिर्फ माता-पिता नहीं बल्कि गैर-प्रजननशील वयस्कों के समूह द्वारा भी की जाती है।

राजहंस (flamingo - *Phoenicopterus roseus*)



अबाबील (*Hirundo rustica*)

चिपकू घोंसले

ऊँची जगहों पर कटोरेनुमा आकार में दीवार या चट्टान से चिपकाकर भी घोंसले बनाए जाते हैं। ये मुख्यतया दो तरह से बनाए जाते हैं। एक तरह के घोंसलों में पक्षी गीली मिट्टी की छोटी-छोटी ढेलियाँ चुनते हैं। उन्हें अपनी लार की मदद से दीवार पर चिपकाते हैं। जब तक एक परत अच्छे से सूख नहीं जाती तब तक मिट्टी की ढेलियों की दूसरी परत नहीं बनाते। कुछ चिपकू घोंसले बनाने में पक्षी पूरी तरह सिर्फ अपनी लार का इस्तेमाल करते हैं। वे किसी बाहरी सामग्री पर निर्भर नहीं रहते।



स्विफ्टलेट (*Aerodramus fuciphagus*)



माही बाज़ या मछली मार (osprey - *Pandion haliaetus*)

मचान भ्रासित घोंसले

जैसा कि नाम से ज़ाहिर है, ये घोंसले ऊँचाई पर बने होते हैं। मसलन ऊँची बिल्डिंग की छत या छज्जे, चौड़े खम्बे, ऊँचे पेड़ या ऊँची चट्टान की कटान पर। पक्षी ऊँचाई इसलिए चुनते हैं ताकि वे वहाँ से चारों ओर नज़र रख सकें। टहनियों से बने ये घोंसले साल दर साल मरम्मत करके बार-बार इस्तेमाल किए जाते हैं।



कौआ (*Corvus splendens*)





दर्जिन चिड़िया
(*Orthotomus sutorius*)

सिले-बुने घोंसले

घास के तिनकों और रेशों को आपस में गूँथकर तैयार किए ये घोंसले पेड़ की टहनी से लटके रहते हैं। पक्षी के अन्दर जाने के लिए इनमें सिर्फ एक छोटा मुँह होता है। बाकी हर तरफ से यह बन्द होता है। इस तरह ये घोंसले शिकारियों से तो सुरक्षित होते हैं, लेकिन तेज़ हवा इनके लिए खतरनाक साबित हो सकती है।

दर्जिन चिड़िया पेड़ पर लगी पास-पास की पत्तियों को आपस में मिलाकर शंकुनुमा आकार देकर उन्हें मकड़ी के जालों व रेशों की मदद से सिल देती है। और बया समूह में हैलमेटनुमा घोंसले बुनते हैं जो पानी के ऊपर पेड़ों की टहनियों में हवा में झूलते दिख जाते हैं।



शकरखोरा (*Leptocoma zeylonica*)



युरेशियाई पीलक (*Oriolus oriolus*)



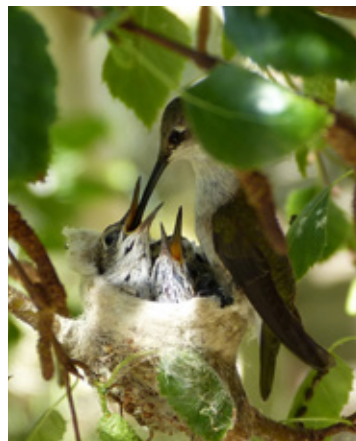
बया (*Ploceus philippinus*)



नाचरा (White-throated Fantail — *Rhipidura albicollis*)

कटोरेनुमा घोंसले

घोंसले के नाम पर मन में जो आकार उभरता है वह है गोल, गहरे कटोरेनुमा घोंसले। ये अमूमन घास के तिनकों, पंखों आदि से बने दिखाई देते हैं। लेकिन कुछ पक्षी अन्य चीज़ों जैसे कि मिट्टी, पेड़ की छाल, मकड़ी के जाले वगैरह से भी कटोरेनुमा घोंसला बनाते हैं। इस तरह के घोंसले पेड़ों की शाखों से लेकर घरों की खिड़कियों तक पर बने दिख जाते हैं।



गुंजन पक्षी (Ruby-throated Hummingbird —
Archilochus colubris)



शुभंग (common iora - *Aegithina tiphia*)



गौरैया (House Sparrow — *Passer domesticus*)



फुदकी (Carolina Wren — *Thryothorus ludovicianus*)



फख्खा (Mourning Dove — *Zenaida macroura*)

कुछ घोंसले यहाँ भी

गौरैया और कबूतर जैसे पक्षी घरों के आसपास खूब दिखाई देते हैं। और, घरों के ही आसपास कोई मुनासिब-सी जगह जैसे कि बन्द

रोशनदान, मीटर, बिजली का खम्भा देखकर वहाँ घोंसला बना लेते हैं। इन पक्षियों के ऐसे ही कुछ घोंसले यहाँ दिख रहे हैं।

और कुछ घोंसले बनाते ही नहीं

कोयल जैसे पक्षी अन्य पक्षियों के घोंसलों में अण्डे दे देते हैं। घोंसले का मूल मालिक न सिर्फ इन अण्डों को सेता है बल्कि चूजे निकलने पर उनको चुग्गा भी देता रहता है। और तो और, घोंसला-चोर के चूजे थोड़ा जल्दी निकल आते हैं और मेज़बान पक्षी के अण्डों को घोंसले से बाहर लुढ़का भी देते हैं। इन चित्रों में जो चूजे भोजन प्राप्त कर रहे हैं वे कोयल के हैं जबकि मेज़बान कोई भी हो सकता है।

भूरी टिकटिकी कोयल के चूजे को खिलाते हुए



केप रॉबिन-चेट कोयल के चूजे को चुग्गा देते हुए



ब्लिथ टिकटिकी कोयल के चूजे को चुग्गा देते हुए

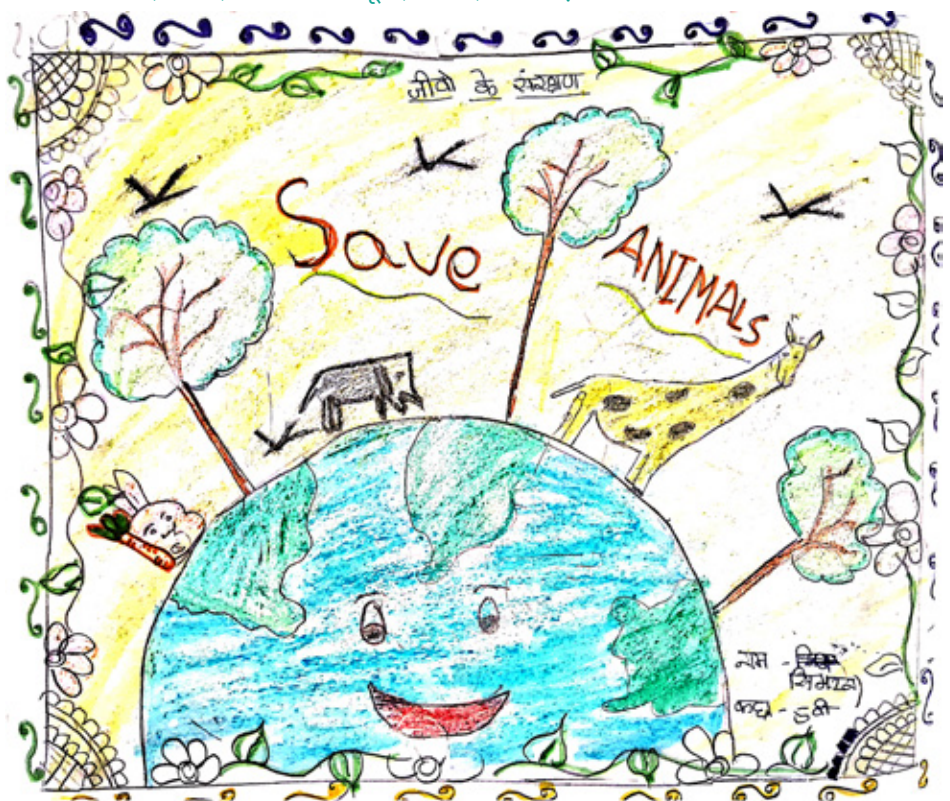


साभार:
स्रोत कैलेण्डर

तुम भी अपने घर या आसपास की जगहों में घोंसलों को देखने की कोशिश करो। तुम्हें किस तरह के घोंसले दिखे? वे किन चीजों से बने हैं? क्या तुम पहचान पाए कि वो किस पक्षी का घोंसला है? इस सबके बारे में हमें लिखो या चाहो तो उन घोंसलों के चित्र बनाकर हमें भेजो।



एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज
परिसर, जाटखेड़ी,
फॉर्चून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

[illegible]

एकलव्य लर्निंग सेंटर, ग्राम मांदीखोह, केसला, मध्य प्रदेश के पाँचवीं से आठवीं कक्षा के बच्चों से प्राप्त



निधि दुखिलाल केवट, पाँचवीं, जिला परिषद उच्च प्राथमिक स्कूल, लोहारा,
चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

रवि कुमार, बारह साल, मंज़िल संस्था, दिल्ली



आम देखिए

सुशील शुक्ल

चित्र: नीलेश गहलोत

बौरों से बेतहाशा भरे आम देखिए
या फरवरी में सुख ये बादाम देखिए
जो काम में लगे हों सुबह-शाम देखिए
फुरसत में हों अगर तो यही काम देखिए

बादामों के पत्तों के खुले रंग देखिए
एकदम ही अलग दिखते धुले रंग देखिए
कहने को गेरु कथई कोई कहले देखिए
न लाल कहिए, सुख कहिए पहले देखिए

बौरों को देखिए कि इनके खोरों को देखिए
कीड़ों की उठती-गिरती हिलोरों को देखिए
काजल लगाके आई है पतरंगी देखिए
वो उड़के अभी आया उसका संगी देखिए

बौरों से बेतहाशा भरे आम देखिए
कि फरवरी में सुख ये बादाम देखिए





उन दिनों हमारे गाँव में बिजली आई ही थी। इधर हमारा नया मकान भी बनकर तैयार हो रहा था। मकान की छत डल गई थी। आगे की रेलिंग नहीं बनी थी। छत पर खेलते बच्चे ज़रा-सी चूक से नीचे गिर सकते थे। छत के आगे से जा रहे बिजली के तारों में उलझ सकते थे।

भादौ के दिनों की साँवली साँझ थी। चारों ओर गीला, नीला-सा उजास फैला था। मकान पर काम कर रहे मज़दूर जा चुके थे। छह साल की केसूली, जिसका घरेलू नाम चिड़िया था, छत पर अकेली खेल रही थी। उसका पता नहीं कब से बिजली के तार से झूलने का मन हो रहा था। उसने चारों ओर देखा कि कोई नहीं है। वह बिजली के तीन में से एक तार को पकड़कर झूलने लगी।

इससे पहले वह पेड़ों की डालों से झूल चुकी थी। लेकिन यह किसी पेड़ की पतली खुरदुरी डाल तो थी नहीं। बिजली का तार था। उसके छोटे-छोटे हाथ पकड़ नहीं बना सके। दोनों हाथ तार से फिसलते हुए छूट गए। वह छत जितनी ऊँचाई से सीधे रास्ते में जाकर गिरी।

काकी ने उसे गिरते हुए देखा था। कैसे वह लहराते हुए नीचे आई थी। कैसे धम्म-से नीचे गिरी थी। पुकारती हुई काकी दौड़ीं। काकी की चीख-पुकार सुनकर और लोग भी दौड़े। एक भीड़ ज़मीन पर बच्ची को घेरे थे। काकी-काका, भैया-भाभी, बाबा सभी अपनी अचेत बच्ची को देखकर रूआँसे हो रहे थे। सोच रहे थे कि मरी हुई चिड़िया की तरह पड़ी

डर

प्रभात

चित्र: सोनल गुप्ता



चक्रमक

24

अप्रैल 2024

अपनी चिड़िया को कैसे पुकारें। करंट के एक झटके ने जिसकी जान ले ली है। वे उसे थपथपा रहे थे। हिला-हिलाकर उसे जगाने की कोशिश कर रहे थे। थक-हारकर उदासी से उसके सिर पर हाथ फिरा रहे थे।

काकी उसके शरीर के पास बैठी सोच रही थीं, “क्या चीज़ इसे सबसे ज़्यादा पसन्द थी?” उसके सिर को सहलाते हुए उदासी से वे बोलीं, “बेटी चिड़िया गुड़ खाएगी क्या?”

“हाँ खाऊँगी।” उसके उसी तरह पड़े शरीर से आवाज़ आई।

वह ज़िन्दा है! यह जानकर सभी की आँखों में चमक आ गई।

काकी उसे गोद में उठाकर घर के भीतर ले जाने लगीं। सभी घरवाले भी पीछे-पीछे आए।

अब वह कुनमनाने लगी तो काकी ने पूछा, “तू इतनी ऊँचाई से गिरी, तुझे चोट नहीं लगी? तू चीखी न चिल्लाई?”

उसने काकी के कान में कहा, “मुझे डर लग रहा था।”

“क्या डर लग रहा था? यह कि गिरने के बाद बचेगी नहीं? मर जाएगी?” काकी ने पूछा।

उसने काकी के कान में कहा, “मरने का नहीं। मुझे काका का डर लग रहा था कि वो बहुत बुरा मारेंगे।”

“नहीं बेटी! तुझे कोई नहीं मारेगा।” काकी के तब तक नहीं आए आँसू अब आ गए।

उसने अपनी चिड़िया बेटी को कसकर गोद में दबा लिया। सबसे छुपा लिया।



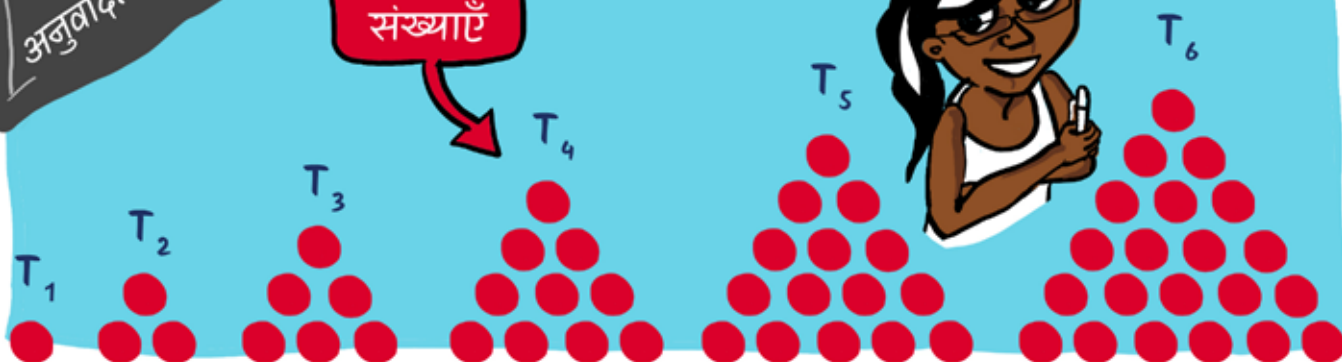
त्रिकोणीय संख्याएँ - भाग 2

आलोका कान्हेरे
अनुवाद: कविता तिवारी, चित्र: मधुश्री

गणित है मजेदार

याद है पिछली बार हमने त्रिकोणीय संख्याओं की बात की थी।

त्रिकोणीय संख्याएँ



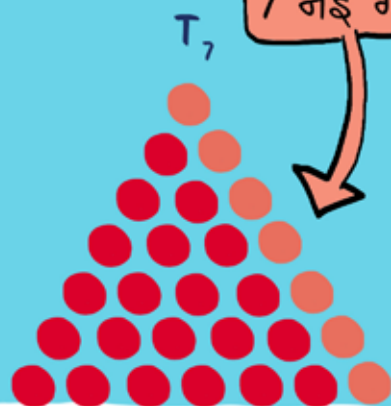
और मैंने तुमसे पूछा था कि "यदि 50वें त्रिभुज में गेंदों की संख्या मालूम ना हो तो 51वें त्रिभुज में गेंदों की संख्या कैसे पता करें?"

चलो, करके देखते हैं।

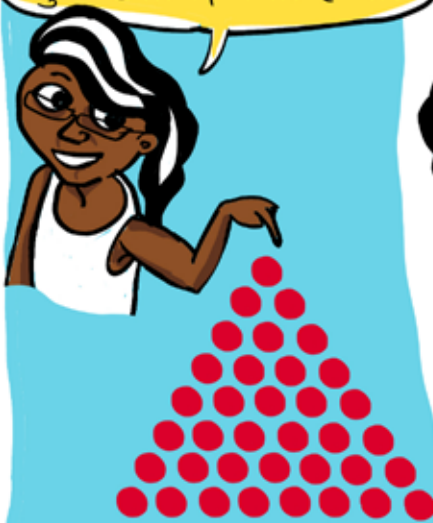
तुम्हें ध्यान है कि 7वें त्रिभुज में गेंदों की संख्या पता करने के लिए हमने 6वें त्रिभुज की गेंदों की संख्या में 7 जोड़ा था।

यानी
7वें त्रिभुज में गेंदों की संख्या
= 6वें त्रिभुज में गेंदों की संख्या + 7
= 21 + 7 = 28

7 नई गेंदें



तो हमारा 8वां त्रिभुज
कुछ ऐसा दिखेगा। है ना?



अब हम इन गेंदों को फिर से जमाते हैं
ताकि हमें थोड़ा अलग त्रिभुज मिले।



जाँच लेना कि दिखाए गए
दोनों त्रिभुजों में गेंदों की संख्या
समान है या नहीं।



अब इस त्रिभुज की
दो प्रतियाँ लेते हैं।

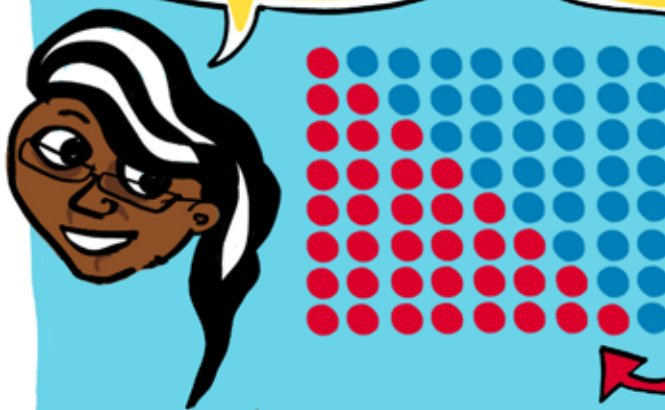


पर हम इनमें से एक प्रति को
इस तरह उलट देते हैं।



अब हम इन दोनों
त्रिभुजों को मिला देते हैं।

ऐसा करने पर हमें एक आयत
मिलता है। अब इस आयत की
भुजाओं पर मौजूद गेंदों को देखो।



छोटी भुजा पर 8 गेंदें हैं।

और लम्बी भुजा पर? $1 + 8 = 9$ गेंदें हैं।

इसलिए
गेंदों की कुल संख्या हुई
 $8 \times 9 = 72$

पर ये तो दो त्रिभुजों में गेंदों की संख्या है। इसलिए एक त्रिभुज में गेंदों की संख्या $72/2 = 36$ होगी।

तो हमने देखा कि 8वें त्रिभुज में गेंदों की संख्या है (8×9) का आधा।



तुम्हें याद होगा पिछले अंक में हमने एक टेबल बनाई थी। अब देखते हैं कि क्या यह बात टेबल के बाकी त्रिभुजों के लिए भी सही है।

त्रिभुज	गेंदों की संख्या	गुणनफल	गुणनफल की आधा
1	1	$1 \times 2 = 2$	1
2	3	$2 \times 3 = 6$	3
3	6	$3 \times 4 = 12$	6
4	10	$4 \times 5 = 20$	10
5	15	$5 \times 6 = 30$	15
6	21	$6 \times 7 = 42$	21
7	28	$7 \times 8 = 56$	28
8	36	$8 \times 9 = 72$	36



लगता है कि यह विधि उन सभी त्रिभुजों के लिए काम करती है जिन्हें हमने अभी तक देखा है। तुम कुछ और त्रिभुज बनाकर जाँचो कि क्या यह विधि उनके लिए भी काम करती है।

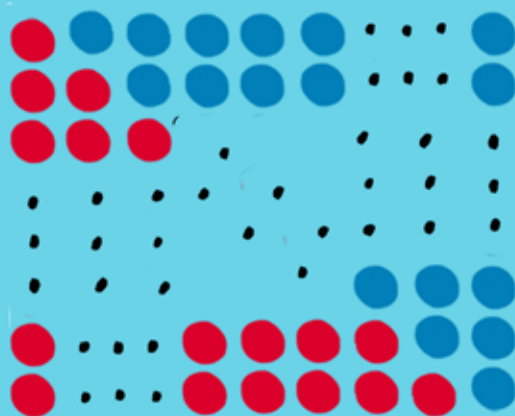
लेकिन केवल कुछ त्रिभुजों के लिए जाँच करके हम यह नहीं कह सकते कि यह विधि हमेशा काम करती है। इसलिए हम

8वां त्रिभुज बनाकर देखते हैं।

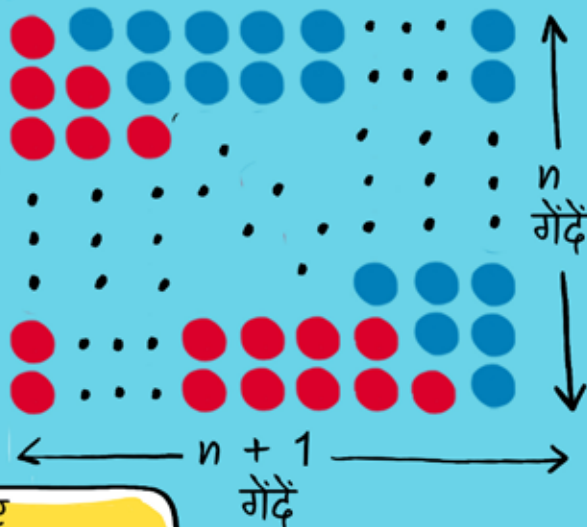
8वें त्रिभुज की तरह हम इस त्रिभुज की भी एक प्रति लेते हैं और उसे इस तरह उलट देते हैं।



अब इन दोनों त्रिभुजों को जोड़कर एक आयत बना लेते हैं।



इससे हमें एक ऐसा त्रिभुज मिलता है जिसकी एक भुजा पर n और दूसरी भुजा पर $n + 1$ गेंदें हैं।



इसलिए
गेंदों की कुल संख्या हुई
 $n(n + 1)$

पर हमने त्रिभुज की दो प्रतियाँ इस्तेमाल की थीं। इसलिए n वें त्रिभुज में गेंदों की कुल संख्या हमेशा $n(n + 1)$ का आधा होगी। यानी कि n वीं त्रिकोणीय संख्या $n(n + 1)$ का आधा होती है।



तो हमने त्रिकोणीय संख्या पता करने का एक तरीका खोज लिया।

क्या तुम त्रिकोणीय संख्या पता करने का कोई और तरीका बता सकते हो? हमें लिखना।

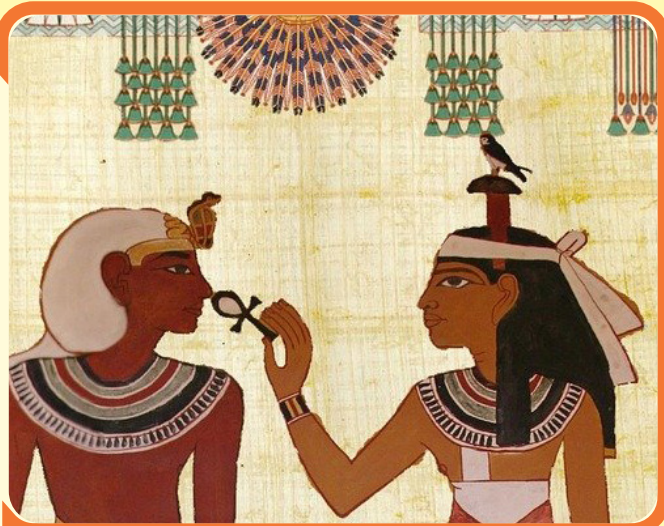
तुम भी जानो

हम मेकअप कब से करने लगे

आजकल मेकअप काफी ज़्यादा लोकप्रिय हो गया है। लेकिन यह मत सोचना कि मेकअप का इस्तेमाल कोई नई बात है। इसका इस्तेमाल प्राचीन समाजों में भी होता था।

इसकी सबसे पुरानी झलक हमें मिस्र से मिलती है। कुछ 6000 साल पहले मेकअप रईसों की पहचान थी। तब ऐसा माना जाता था कि मेकअप लगाने पर भगवान प्रसन्न होंगे। आँखों में कोह्ल/काजल, गालों पर लाली, चेहरे पर सफेद पाउडर और पलकों पर हरा आइशैडो लगाने तब फैशन में था। इतना ही नहीं बालों को छोटा रखकर उन पर नकली बालों की विग और दाढ़ी लगाने का चलन पुरुषों और महिलाओं दोनों में था।

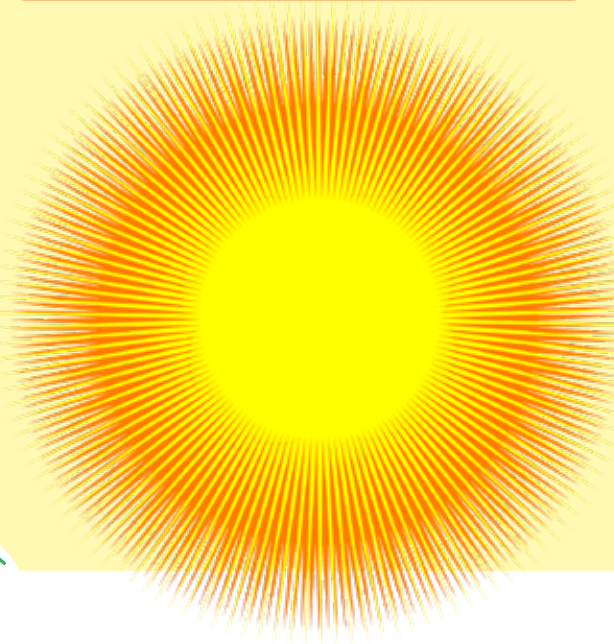
बीच-बीच में मेकअप लगाने की प्रथा घटती, बदनाम होती और फिर प्रचलन में आ जाती जैसे कि आजकल हुआ है।



क्या बढ़ता जाएगा पारा?

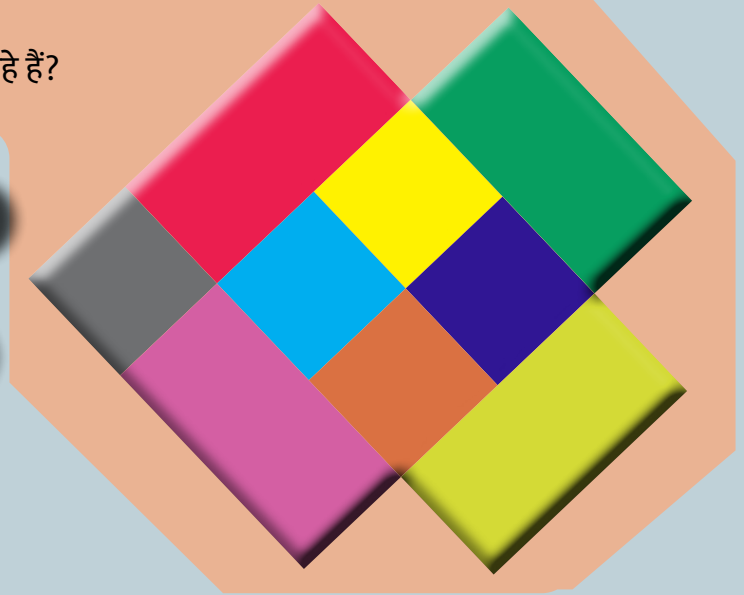
सन 1850 के दशक से दुनिया की कई जगहों पर लगातार तापमान को दर्ज करने का सिलसिला शुरू हुआ। तब से आज तक का सबसे गर्म साल सन 2023 रहा है। इसका कारण जलवायु परिवर्तन है। औद्योगिक युग से पहले के तापमान से पिछले साल का औसत तापमान 1.48 डिग्री सेल्सियस ज़्यादा था। ये अपेक्षित था।

तो 2024 के लिए क्या भविष्यवाणी है? वैज्ञानिकों का कहना है कि परिस्थितियों को देखते हुए भविष्य में भी पृथ्वी का तापमान बढ़ता रहेगा। लेकिन यह ज़रूरी नहीं है कि हर साल पिछले साल से ज़्यादा गर्म होगा। साथ ही पृथ्वी पर हर जगह इतनी गर्मी का अनुभव नहीं होगा। तापमान में बदलाव कुछ साल थोड़ा कम और कुछ साल ज़्यादा होगा। महत्वपूर्ण सवाल यह है कि अधिक गर्मी और उससे जुड़ी घटनाएँ जैसे ज़्यादा तेज़ साइक्लोन, वाइल्डफायर, पानी की कमी इत्यादि का हम सामना कैसे करें।

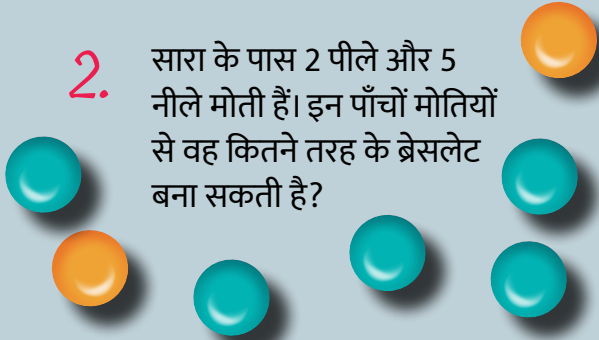




1. इस चित्र में तुम्हें कितने वर्ग दिखाई दे रहे हैं?



2. सारा के पास 2 पीले और 5 नीले मोती हैं। इन पाँचों मोतियों से वह कितने तरह के ब्रेसलेट बना सकती है?



3. इस क्रम की अगली संख्या क्या होगी?

3, 7, 15, 31, ?

4. दिए गए कथनों के आधार पर बताओ कि सबसे छोटा कौन है?

- गुंजा, फियोना से बड़ी है।
- एलेक्स, ज़ोया से बड़ा है लेकिन फियोना से छोटा है।
- ओमी गुंजा से छोटा है लेकिन ज़ारा से बड़ा है।
- यश गुंजा से छोटा है।
- एलेक्स ओमी से बड़ा है।
- फियोना यश से छोटी है।

5. 14 बत्खों को 4 तालाबों में इस तरह छोड़ना है कि हर तालाब में पहले वाले तालाब से एक बत्ख ज़्यादा हो।



6. दी गई ग्रिड में घर में इस्तेमाल होने वाली कई चीज़ों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

अ	टॉ	झा	डू	ते	च	श्मा	चा	बी
च	ल	र्च	छ	सु	टा	सि	र्ज	कैं
प्प	जू	मा	त	आ	ई	ना	र	ची
ल	बो	चि	री	चा	कू	ना	डि	यो
का	त	स	ता	र	पू	डा	ब्बा	सा
बा	ल	टी	फ	पा	मो	तू	दा	बु
घ	ब	र	ज़ा	ई	पो	म	ग	न
डी	पं	ट	स्सी	मा	सा	ल	ब	ला
जू	खा	रे	न	ली	चा	य	प	त्ती

माथा पच्ची

फटाफट बताओ

कौन-सी चीज़ है जो
जितना ज़्यादा अँधेरा हो,
उतनी ही ज़्यादा साफ
नज़र आती है?

(आफ)

कौन-सी चीज़ है जिसे
आधी खा लो, तो भी
उसे पूरी ही कहते हैं?

(फ्रि)

क्या है जो उलटा करने
पर कम हो जाता है?

(ए)

बूझो प्यारे एक पहेली,
काली थाल की गोरी सहेली
घूम-घूमकर नाच दिखाती,
फूल के मैं कुप्पा हो जाती

(डिफि)

दूध की कटोरी में काला पत्थर
जल्दी बताओ तुम सोचकर

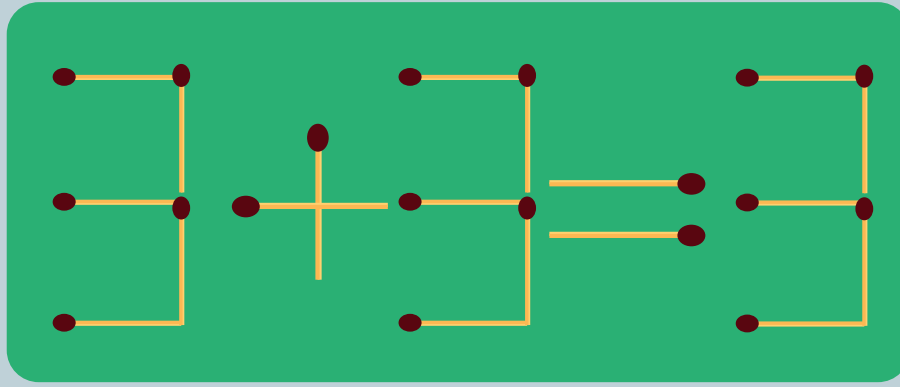
(छॉए)

पत्थर की नाव पर बैठा सवार
चलती नहीं नाव, पर चलता सवार

(आम्र)

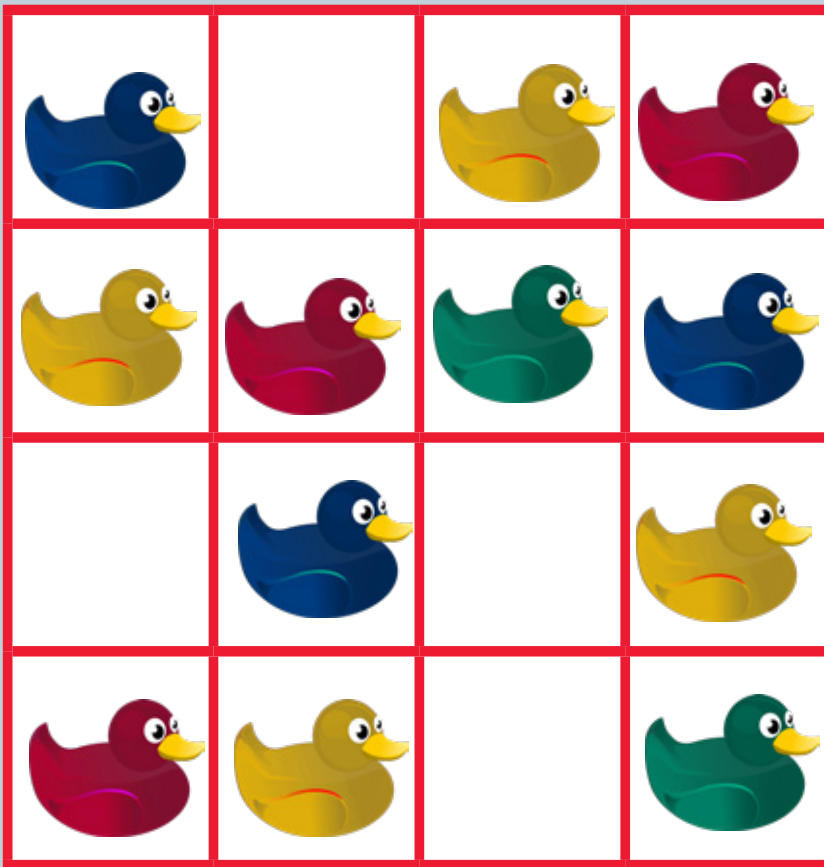
अन्तिम दोनों पहेलियाँ एकलव्य लर्निंग सेंटर,
ग्राम दौड़ी, केसला, मध्य प्रदेश के बच्चों से
प्राप्त

जवाब पेज 42 पर



7. दो तीलियों को इधर-उधर करके तुम्हें इस समीकरण को
ठीक करना है। कैसे करोगे?

8. दो अंकों की एक ऐसी संख्या है जो अपने अंकों के जोड़ से
7 गुनी है। तुम्हें पता है वो संख्या?



9. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग
बत्तख आनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों
में कौन-सी बत्तख आएंगी?

सुडोकू 72

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

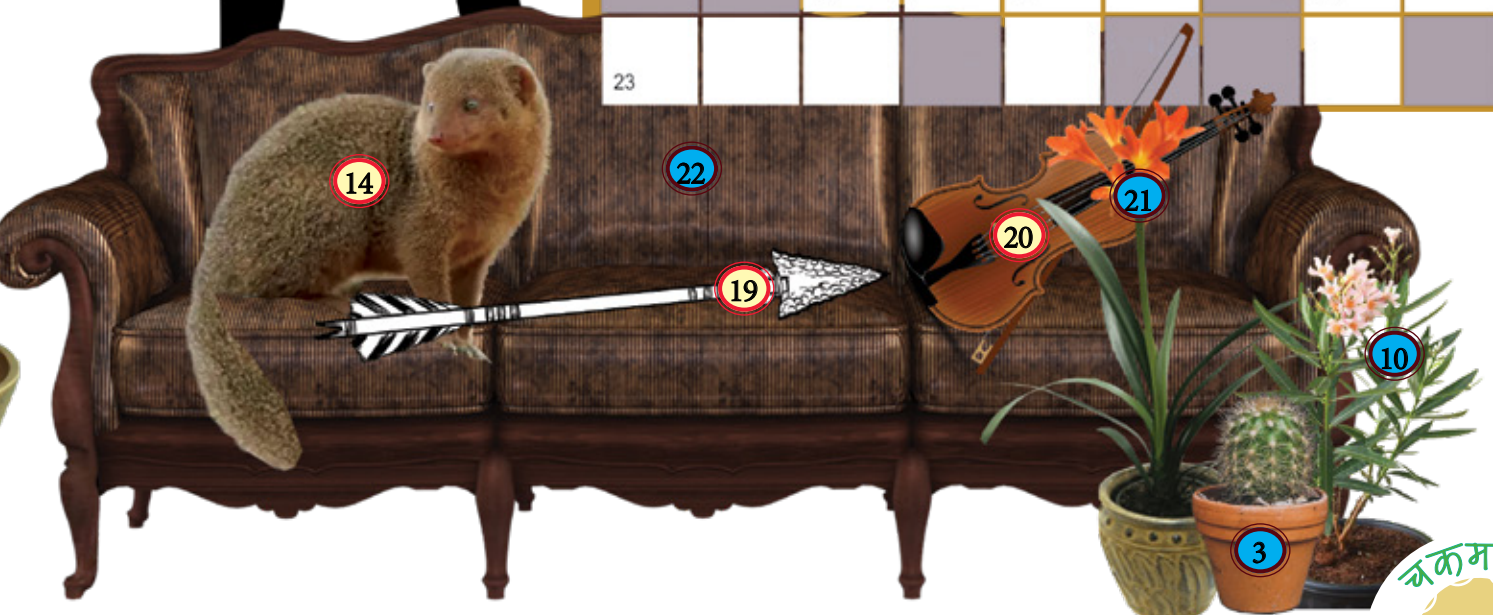
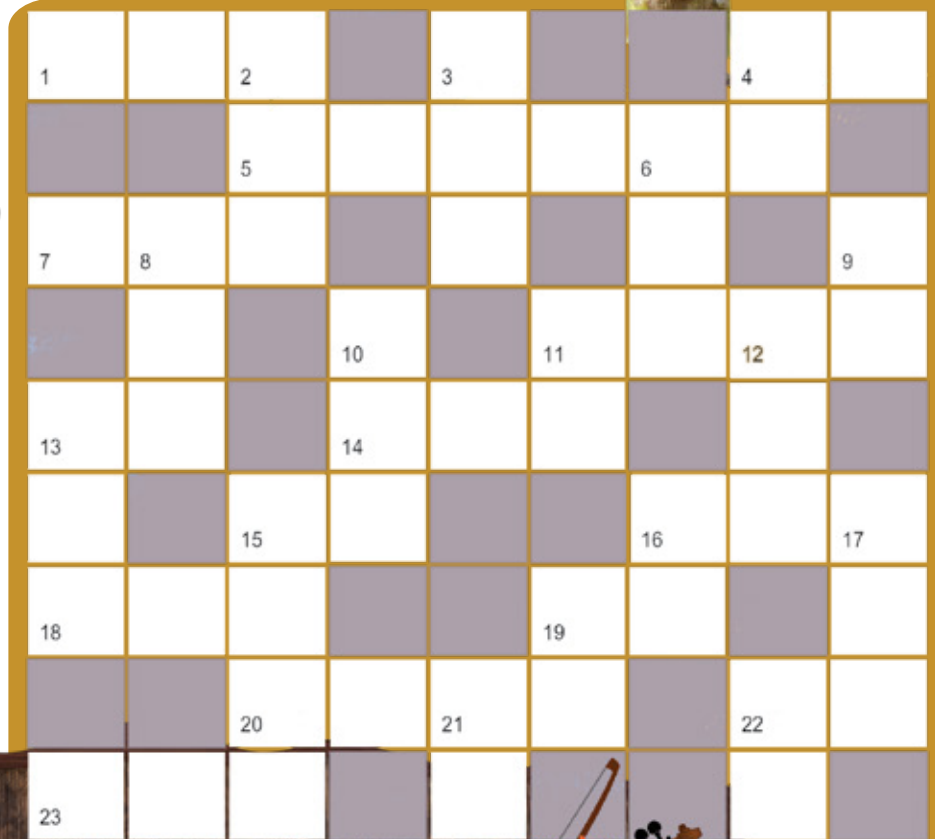
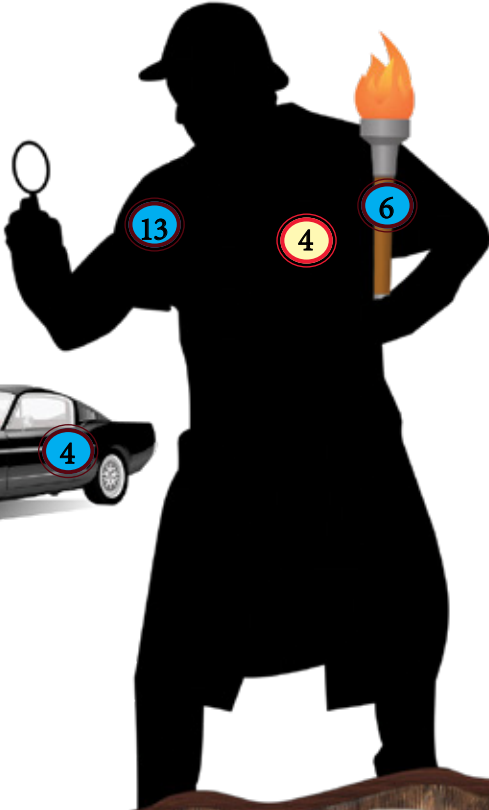
6		8		3	4			
3	9	7				4		6
			5		9	3	7	
	8			4	6			3
	6	3		7			2	4
	4		8			5		
8	1	6	4		7			9
2				9	1		8	
			3	8		6		



पहेली चित्र

● बाएँ से दाएँ

● ऊपर से नीचे



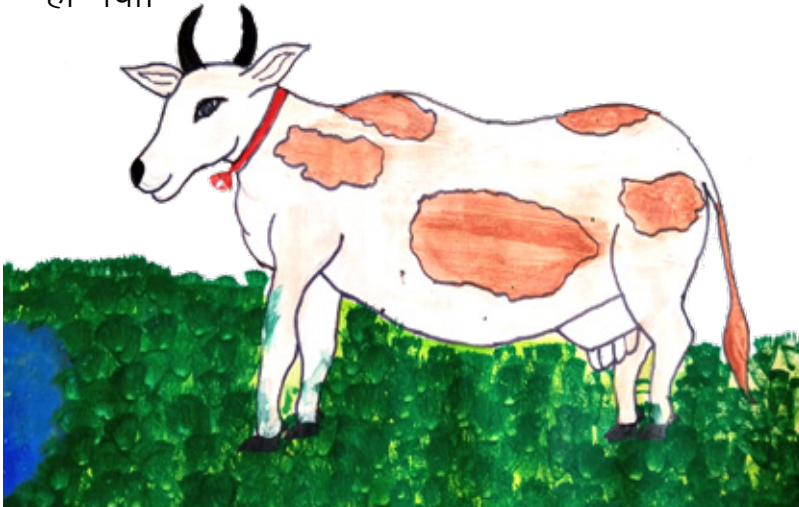
हमारी गाय चुनचुन

शिक्षा लोवंशी
पाँचवीं, वैष्णवी पब्लिक स्कूल
मेंदुआ, बंगरसिया, भोपाल, मध्य प्रदेश

हमारे गाँव में सारी गाय चरने जाती हैं। और हमारी गाय चुनचुन भी उनके साथ जाती है। एक बार जब चुनचुन चरने गई तो वह वापिस घर नहीं आई। मेरे पापा ने उसे बहुत ढूँढा। पर वह नहीं मिली।

मेरे चाचा और दादाजी ने भी उसे बहुत ढूँढा। फिर चार-पाँच दिन बाद किसी ने कहा कि आपकी गाय नर्सरी के पीछे है। फिर मेरे चाचा चुनचुन को ढूँढने गए तो वह मिली। पर उसके एक पैर की हड्डी किसी ने तोड़ दी थी। उससे बिलकुल भी चलते नहीं बन रहा था। वह बहुत मुश्किल से घर तक आई।

फिर मेरे पापा उसे जानवरों के हॉस्पिटल में ले जाने के लिए ऑटो बुलाने गए। तो ऑटो वाले ने कहा कि पहले सरपंच से लिखवाकर लाओ। फिर मैं चलूँगा। फिर उसे ऑटो में चढ़ाकर ले गए। फिर डॉक्टर ने उसके पैर पर प्लास्टर किया। फिर जब दो महीने बाद उसके पैर से प्लास्टर निकाला तो उसका पैर सही हो गया।



चित्र: सुरगी, सात साल, स्टूडियो रनिंग स्टिच,
बेंगलूरु, कर्नाटका

चित्र: अमित कुमार, आठवीं, आशा सामाजिक
शिक्षण केन्द्र, कोसड़ा, वाराणसी, उत्तर प्रदेश



मेरी पतंग

महिमा मवासे
पाँचवीं, प्राथमिक शाला, छिमडी
शाहपुरा, मध्य प्रदेश

कितनी सुन्दर पतंग
मैं इसे उड़ाता हूँ
अरे! मैं तो उड़ चला
कुत्ता भी उड़ चला
बहना भी
और मेरी दोस्त भी
पर माँ... माँ ने थाम लिया

भूत का प्यार

अमित दीपक
चौथी, एकलव्य लर्निंग सेंटर
ग्राम बन्दी, केसला, मध्य प्रदेश

एक गाँव में चन्द्रकान्त रहता था। वह भूत से बहुत डरता था। उसे चूहे की आवाज़ से भी डर लगता था। यह सब एक भूत देखता था। एक दिन भूत ने चन्द्रकान्त को प्यार से फूल दिया और कहा कि भूत से नहीं डरना चाहिए। भूत कुछ नहीं करता है जब तक कि आप उनका कुछ न करें। चन्द्रकान्त यह सुनकर खुश हो गया।

चित्र: हर्ष मोहिते, आठवीं, ऋषि वाल्मिकी ईको स्कूल, मुम्बई, महाराष्ट्र (स्लैम आउट लाउड संस्था से प्राप्त)



ठण्डा-ठण्डा कूल-कूल
मेरा प्यारा सुन्दर स्कूल
यहाँ पढ़ते बच्चे हैं
मेरे दोस्त अच्छे हैं
हमें यहाँ नहीं गिरना है
हमें यहाँ बस पढ़ना है
हमें यहाँ की पढ़ाई हमेशा भाएगी
हमें यहाँ की याद बहुत ही आएगी

मेरा स्कूल

अंकित जलाल
छठवीं, शिशु मन्दिर
ग्राम सीम, नैनीताल, उत्तराखण्ड

समोसे का चित्र

गौरव आर्या
सातवीं, आरोही बाल संसार
प्यूड़ा, नैनीताल, उत्तराखण्ड

बरसात के दिन थे। घर में बहुत ठण्ड थी। मेरे मन में घण्टी बजी और समोसे का चित्र दिमाग में आया। रसोई में जाकर देखा तो सब कुछ खतम था। मैंने चप्पल पहनी और पगडण्डी पार करते हुए मैं दुकान से समोसे की सारी सामग्री ले आया। लेकिन बात ये थी कि समोसा बनाएगा कौन क्योंकि समोसे बनाने मुझे नहीं आते। तभी मैंने मम्मी को आवाज़ दी। मम्मी बोलीं, “क्या हुआ?” मैंने मम्मी को सारी बातें बताई कि मेरा मन है समोसे खाने का। मैं सारा सामान भी ले आया। लेकिन पता चला कि मेरा फिज़ूल का खर्चा हो गया क्योंकि मम्मी ने पहले से ही समोसे बनाकर रखे थे।



चित्र: नोआ, छह साल, आगरा, उत्तर प्रदेश

भैया का डीजे

हिमांशु वर्मा
सातवीं
कम्पोजिट स्कूल
धुसाह, बलरामपुर
उत्तर प्रदेश

मेरे भैया डीजे का काम करते हैं। मैं कभी-कभी भैया के साथ गोदाम पर जाता हूँ। जब डीजे किराए पर जाता है तो कई बार शॉर्ट सर्किट होने के कारण या बिजली की उचित सप्लाय न होने के कारण डीजे के तार जल जाते हैं। तब भैया उन्हें ठीक करते हैं। मैं उन्हें देखकर उनका काम सीख रहा हूँ।

मेरे घर के बगल में एक लोग के यहाँ मुण्डन था। और उन लोगों ने भैया का ही डीजे बुक किया था। मुण्डन के दिन भैया घर पर नहीं थे। डीजे तो ठेले पर चला गया। पर ज़िम्मेदारी होने के कारण मैं भी उसके साथ चला गया।

थोड़ी देर बाद अचानक से डीजे का एक साउंड बन्द हो गया। मैंने ध्यान-से देखा तो पाया कि उसका एक तार गल गया है। मैंने झट-से उसे हटाकर नया तार जोड़कर उसे ठीक कर दिया। अब वह साउंड भी बजने लगा। थोड़ी देर बाद भैया आए तो उन्होंने कहा तुमने सही काम किया।

चित्र: सोनल गायकवाड़, छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र



हमारे जंगलों में एक पहाड़ है। और थोड़ी दूरी पर एक गाँव है। उस गाँव में रामकिशन रहता है। रामकिशन को मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए नदी से पानी लाने जाना पड़ता था। मिट्टी के बर्तन बनाने के बाद वह जंगल जाता और लकड़ियाँ जुटाता था। फिर घर आकर लकड़ियाँ जलाता। फिर मिट्टी के बर्तनों को पकाता। फिर बाज़ार जाकर मिट्टी के बर्तन बेचकर अपना पेट भरता था। अगर उसके मिट्टी के बर्तन नहीं बिके तो भूखा ही सो जाता था।

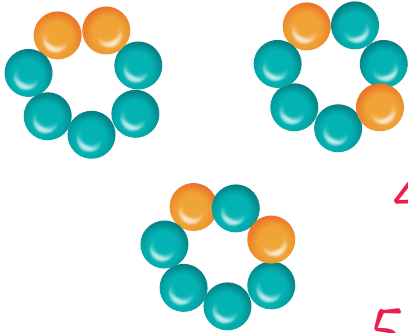
रामकिशन के मिट्टी के बर्तन

माधुरी यादव
सातवीं, एकलव्य लर्निंग सेंटर
ग्राम बर्धा, केसला, मध्य प्रदेश

चित्र: मोनिका खलखो, आठवीं, माध्यमिक विद्यालय, नोनियाटांगर, छत्तीसगढ़



2. केवल 3, कुछ इस तरह:

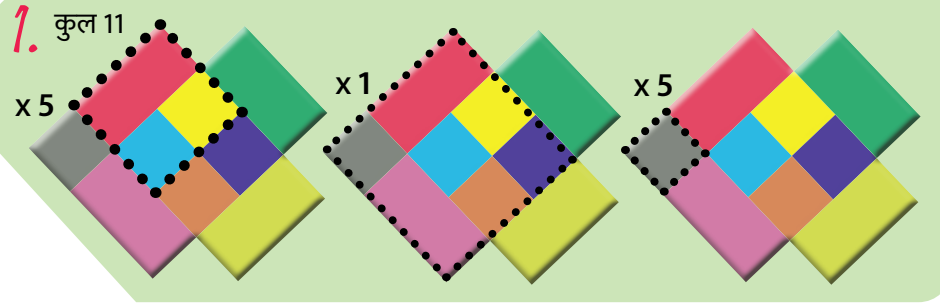


1. कुल 11

x 5

x 1

x 5



पहले कथन के हिसाब से गुंजा सबसे छोटी नहीं है। दूसरे कथन के अनुसार एलेक्स और फियोना भी सबसे छोटे नहीं हैं। तीसरे कथन के अनुसार ओमी सबसे छोटा नहीं है और छठे कथन के अनुसार यश भी सबसे छोटा नहीं है। इसलिए सबसे छोटी ज़ारा है।

5. 2, 3, 4 व 5

6.

3. इस क्रम का पैटर्न है:

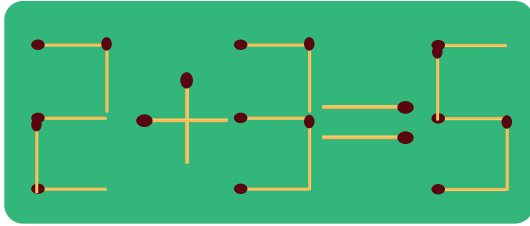
$$(3 \times 2) + 1 = 7$$

$$(7 \times 2) + 1 = 15$$

$$(15 \times 2) + 1 = 31$$

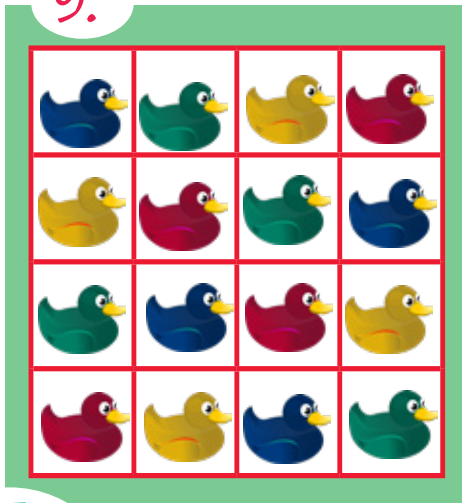
इसलिए अगली संख्या होगी, $(31 \times 2) + 1 = 63$

7.

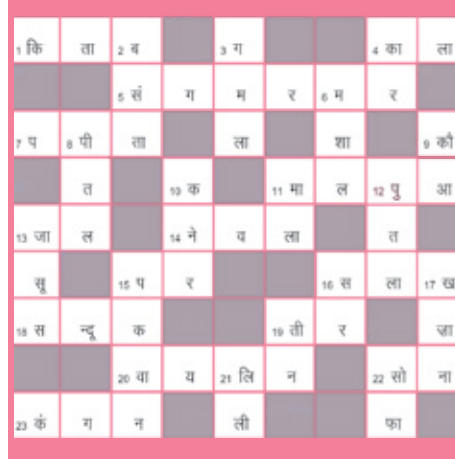


8. 21

9.

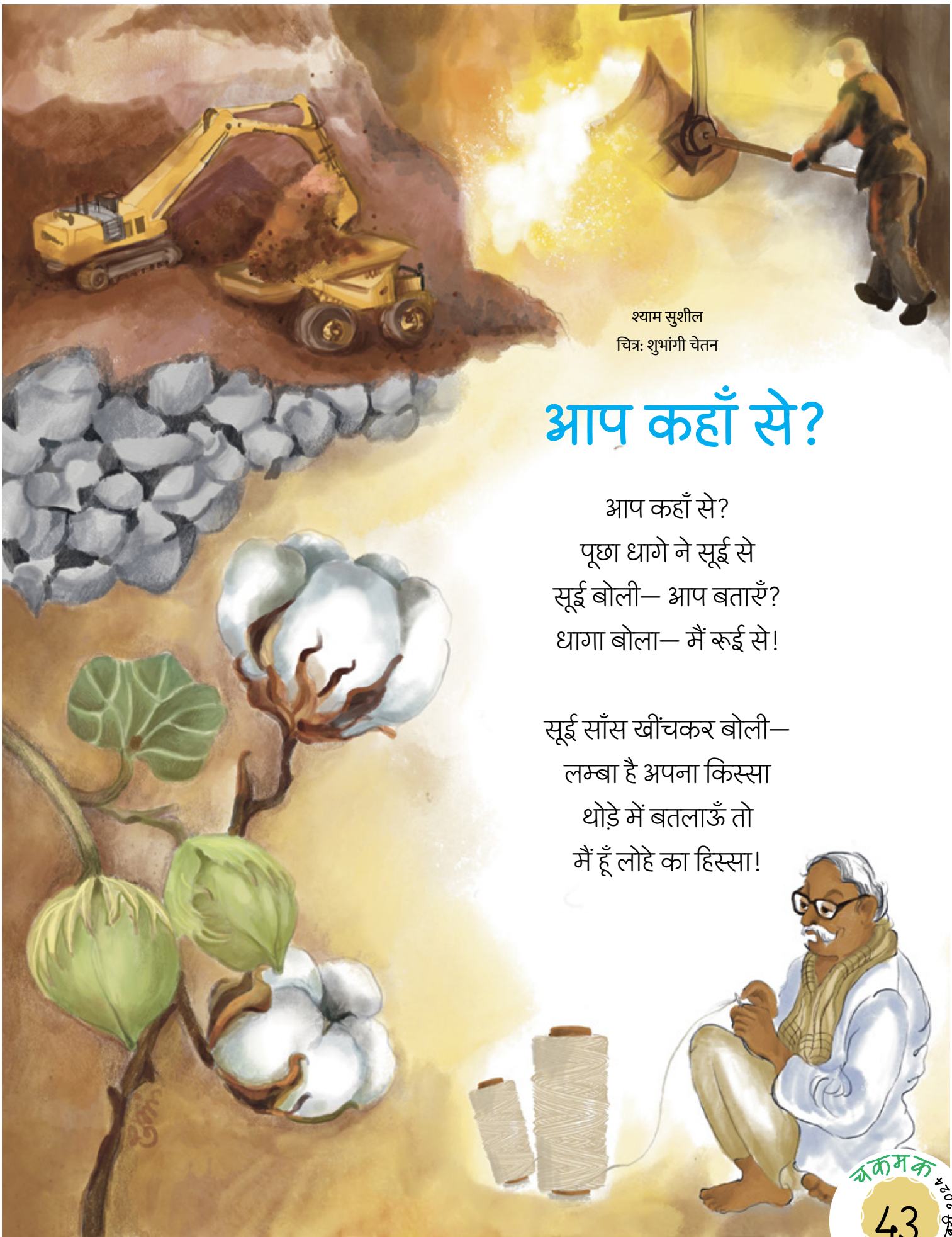


इस अंक की चित्रपहेली का जवाब



सुडोकू-72 का जवाब

6	5	8	7	3	4	1	9	2
3	9	7	1	2	8	4	5	6
4	2	1	5	6	9	3	7	8
7	8	5	2	4	6	9	1	3
1	6	3	9	7	5	8	2	4
9	4	2	8	1	3	5	6	7
8	1	6	4	5	7	2	3	9
2	3	4	6	9	1	7	8	5
5	7	9	3	8	2	6	4	1



श्याम सुशील
चित्र: शुभांगी चेतन

आप कहाँ से?

आप कहाँ से?
पूछा धागे ने सूई से
सूई बोली— आप बताएँ?
धागा बोला— मैं रूई से!

सूई साँस खींचकर बोली—
लम्बा है अपना किस्सा
थोड़े में बतलाऊँ तो
मैं हूँ लोहे का हिस्सा!



शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार
MINISTRY OF EDUCATION
GOVERNMENT OF INDIA



New Delhi | नई दिल्ली
World Book Fair | विश्व पुस्तक मेला
Books for All



विश्व के सबसे बड़े पुस्तक मेले में आएँ! नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला

10-18 फरवरी 2024 | सुबह 11 बजे से शाम 8 बजे तक
हॉल संख्या 1 से 5, प्रगति मैदान, नई दिल्ली

Theme
बहुभाषी MULTI
भारत LINGUAL
INDIA
एक जीवंत परंपरा A Living Tradition

आकर्षण

- थीम मंडप-बहुभाषी भारत
- बालमंडप
- अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन मंच
- लेखक मंच
- नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच
- सांस्कृतिक कार्यक्रम
- डिजिटल और आभासी पठन
- पुस्तक उत्सवों का महोत्सव

INDIA भारत



अतिथि देश
सऊदी अरब



1000
प्रकाशक

2000
स्टॉल्स

600
कार्यक्रम

प्रवेश निःशुल्क : स्कूली विद्यार्थियों (यूनिफॉर्म में), दिव्यांगजनों एवं वरिष्ठ नागरिकों के लिए



शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार
MINISTRY OF EDUCATION
Government of India



नई दिल्ली

विश्व पुस्तक मेला 2024

10-18 फरवरी 2024 • प्रगति मैदान, नई दिल्ली



प्रिय पाठक.....,

हम आपको नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2024 के उद्घाटन समारोह के साथ-साथ दिनांक 10 से 18 फरवरी 2024 तक आयोजित पुस्तक मेले व अन्य कार्यक्रमों में सपरिवार सादर आमंत्रित करते हैं। किताबों की बहुभाषी दुनिया में आपका स्वागत है।

युवराज मलिक
निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

उद्घाटन समारोह : 10 फरवरी 2024

पुस्तक मेला व अन्य कार्यक्रम : 10 से 18 फरवरी 2024

कृपया इस आमंत्रण पत्र की मूल प्रति पर अपना नाम लिखकर ndwb24print@gmail.com पर भेजें और निःशुल्क प्रवेश के लिए अपना ई-पास* प्राप्त करें।

*एक ई-पास अधिकतम चार सदस्यों के लिए मान्य।



RSVP: ndwb24print@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोजारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
से प्रकाशित एवं आर के सिक्वुप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।

सम्पादक: विनता विश्वनाथन